रात्रि क्लास 29-11-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

भल कोई ओपिनियन्स भी लिखकर जाते हैं कि बहुत अच्छा है। तो भी कई कहेंगे हम इसे टाली नहीं करते। क्योंकि शास्त्रों को बहुत मानते हैं ना। और तुम लोग शास्त्रों को नहीं मानते हो। शास्त्र हैं भक्ति मार्ग के। तो एक ही बाप है जिसको नालेजफुल कहा जाता है। भक्ति मार्ग में कब कोई को नालेजफुल जानीजाननहार नहीं कहा जा सकता। मनुष्य जानीजाननहार हो न सके। बाप के लिये कहते हैं जानीजाननहार क्या है वह नहीं समझते। बाबा बतलाते हैं मैं क्या जानता हूं। जानी जाननहार अर्थात जो सभी कुछ जानते हैं। वही समझाते हैं सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है। सृष्टि के आदि मध्य अन्त की नालेजकृष्ण को होता नहीं। वह सभी है भक्तिमार्ग सभी हैं भक्त। शास्त्रों के और गुरुओं को मानने वाले, गुरु कब सदगति दे न सके। तुम बच्चों को मालूम हो गया इस झाड़ के कितने पत्ते हैं। पत्ते वृद्धि को पाते रहते हैं। आखरीन झाड़ का अन्त भी होता है। कैसे जड़जड़ीभूत अवस्था को पाते हैं। वह भी तुम जानते हो फाउन्डेशन है नहीं। यह चक्र फिरता रहता है। आयु को भी वह लोग नहीं जानते हैं। चौपड़ी में भी स्वस्तिका निकालते हैं। गणेशायनमः लिखते हैं हरेक में। अभी तुम्हारी और उनकी बुद्धि में कितनाफर्क है। वह है आसुरी मनुष्य मत। यह है ईश्वरीय मत। तुम समझा सकते हो श्रीमत राजयोग सिखलाते हैं। श्रेष्ठ राजाओं का राजा बनाते हैं। तो संगम युगी ठहरे। संगम पर फिर कृष्ण कहां से आया। शिव जयन्ति कृष्ण जयन्ति जरूर होनी है। तुम जानते हो कृष्ण जयन्ति जरूर होनी है। कृष्ण जयन्ति वही नारायण जयन्ति हुई। नारायण का और कोई समाचार देते नहीं हैं। तो यह है नई दुनिया के लिये नई नालेज। फिर दुनिया पुरानी जरूर होनी है। इसको नया बनाने वाला बाप ही ठहरा। यह नालेज है तुम्हारे पास। आते तो बहुत हैं। अच्छा2 कहकर भी जाते हैं। तुम बच्चे समझते हो हम जो सर्विस करते हैं कल्प पहले भी ऐसे करते थे। यही रिजल्ट थी। कल्प कल्पान्तर यह रिजल्ट निकलती है। आते2 निकलती रहती है। मेहनत तो होती है ना। जिसने पुरा नहीं भी पूजा बनते हैं। संशय बुद्धि जो पानी जायेंगी तो सभी की आंखें खुलेंगी। तार में भी समझाया गया है। तार भी छपेंगी। मैगजीन में भी छपेंगी। तुम समझते हो हम वारियर्स हैं। देहली पर धैरा डाल रहे हैं। दिल्ली से ही विजय का आवाज निकलना है। तुम भी कोशिश कर दिल्ली के बड़ो2 को हाथ करते हो। आधा कल्प विकारी रहे हैं उनको निर्विकारी बनाया जाता है। यह नई बात नहीं है ना। दुनिया के मनुष्य नहीं समझते अभी संगम युग है, माया तुम बच्चों को भी संगम युग भूला देती है। संगम युग याद हो स्वर्ग भी जरूर याद आये। खुशी भी रहे। परन्तु भूल जाते हैं। संगम युग याद है तो बाप भी जरूर याद है। संगम युग माना ही बाप ही याद। तो माया भूला देती है। सारा दिन याद नहीं रहती। बाप के साथ साथ संगम युग भी याद नहीं रहता। संगम युग पर हो तब चक्र भी याद आता है। परन्तु माया बहुतों को भूला देती है। बाप कहते हैं मुझे याद करो। वह भी भूल जाते हैं। तो संगम युग फिर कैसे याद पड़ेगा। संगम युग और ही नई चीज है। बाप तो पुरानी चीज है। भक्ति में कब संगम युग को याद किया जाता है क्या। बच्चे जो सारा दिन म्युजियम में सर्विस करते रहते हैं उनको घड़ी2 याद पक्की हो जाती होगी। सेन्टर पर इतना सर्विस का चान्स नहीं। म्युजियम में तो सारा दिन सर्विस रहती है। बाप टीचर गुरु है यह भी खड़े नहीं रह सकते हैं। याद ठहर जाये तो अहो सौभाग्य। बच्चों को विश्व की बादशाही मिलती है। उसके लिये मेहनत है ही याद की। म्युजियम में सबसे अच्छी उन्नति होती है। सर्विस कर फिर सर्विस का समाचार देते हैं। तो उनकी और ही जास्ती उन्नति होती है। बाप समाचार से ही खुश होते हैं अच्छा सर्विस एबुलहै। अच्छा समाचार देते हैं। शौक है उनको सर्विस का। बाप को समाचार देते हैं बाप रेसपाण्ड भी देते हैं। अच्छा समाचार बच्चों को सुनाया जाता है। तार को भी चार पांच दिनों से कैसट करते आये हैं। बाप को मेहनत करनी पड़ती है। ऐसा अच्छी रीत समझावें जो कुछ बुद्धि में तो बैठे। विश्व में शांति के लिये कितने कानफ्रेन्स आदि करते रहते हैं। उनको तो पता ही नहीं। बाप बतलाते हैं कैसे एक ही राज्य स्थापन होती है। अच्छी रीत समझाना है। बहुत –

बहुत हठी स्त्री ये सर्विस करती होती है। सर्विस भी होती है। माया2 डिससर्विस भी। महारथी पर माया वार करती हैं तो डिससर्विस करते होंगे। सर्विस से जरती कहां2 डिससर्विस कर देते हैं अच्छे2 महारथी। समाचार आता है पुराना महारथी है परंतु डिससर्विस करती हैं। सिर्फ सर्विस होती रहे तो वृधि को पाये। माया डिससर्विस कराती हैं। इसलिये टाईम लगता है। ~~टाई~~ गायन भी है वेहद का बाप वेहद का वरसा देंगे। अच्छे अच्छे बच्ची ब्रह्मण भी बड़ी डिससर्विस करती हैं फिर उसको सर्विस में लाना बड़ी तकलीफ होती है। स्थापना तो होनी ही है ना। सर्वशक्ति वान बाप आते हैं इस नई दुनिया की स्थापन करने के लिये। मनुष्य ही इन बातों को समझ सकते हैं। जो नहीं समझ सकते जो जानवर मिसल हैं। वह पद भी इतना नहीं पाते। यह भी ड्रामा है। आगे कहते थे ईश्वर ही करन करावनहार है। ईश्वर ही दुःख सुख देते हैं। बाप कहते हैं ड्रामा प्लेन अनुसार होता है। सब प्लेन्स पर बाप का ~~प्लेन~~ प्लेन विजय पाता है। सब की प्लेनस मिट्टी ~~xx~~ में मिल जानी है। यह भी होंगे ही नहीं। ड्रामा भी भावी बड़ी विचित्र है। समझते भी हैं विनाश जल्दी होने का है। बम्स आदि बनाने में खर्चा बहुत बहुत लगाइसलिये कोई बनाते बनाते बन्द कर देते हैं। दुनिया का विनाश ही होना है। यह है सबसे बड़ा दुनिया का समाचार। कोई डिससर्विस भी करते हैं कहेंगे ड्रामा अनुसार करते हैं। कुछ देरी है। कितने बच्चों को देखो माया ठहरने नहीं देती हैं। सर्विस की बातें सुनने से खुशी होंगी। ~~अ~~ डिससर्विस सुनने से ख्याल होगा। लड़ाई का मैदान है ना। वाकसिंग होती है ना। लाखों रुपया खर्च होता है। यहां खर्चा आदि की बात नहीं। बुधि से काम लेना होता हैं। बाप आत्माओं को सभी बातें समझाते हैं। जैसे बाप को नालेज है वैसे तुम बच्चों को मिलती हैं। ~~अविनाशी~~ अविनाशी बाप से अविनाशी वरसा मिलता है फिर भी नीचे तो उतरना होता है ना। सुख मिलता है तब उनको याद किया जाता है। बाप कितना सहज समझाते हैं। अनेकों को अनगिनत बार समझाया होगा। तो इतना फिर याद भी रहना चाहिए। विचार होता रहता है आबू एक दिन बहुत जोर भरेगा। ख्याल होता है नाम बहुत हो जावेगा। आबू तो सबसे बड़ा तीर्थ हो जावेगा। लेक के तरफ अच्छा~~x~~ अच्छा प्लाट ले लेना चाहिए। जैसे ~~ह~~ हरिद्वार पर ढेर जाकर बैठते हैं ऐसे यहां भी वेहद के बाप के तट पर आकर बैठ जावेंगे। सबसे बड़ा तीर्थ हो जावेगा ना। तुम बहुत अच्छा बनावेंगे। घड़ी2 आकर सुनेंगे समझेंगे। रिफ्रेश होने लिये कोई जल्दी कोई देरी से आते हैं आगे चल जल्दी आवेंगे। आगे चल तुम बहुत वन्डर्स देखेंगे। आबू का बहुत प्रभाव तुम देखेंगे। अच्छा रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुड~~नाइ~~ नाईट।

तुम बच्चों को दैवी गुण भी धारण करनी है। आपस में लड़ना झगड़ना न है। माया इतनी जबरदस्त है जो अच्छे2 फर्स्ट बच्चों को भी आपस में लड़ाई करा देती हैं। देह अभिमान में आकर लड़ना झगड़ना सिखला देती हैं। आपस में तूम पानी हो पड़ते हैं। महारथी बच्चों की तो अच्छी रीत माया लाख उतारती हैं। ऐसे मत समझो हम तो बहुत होशियार हैं। बहुत होशियार को ही माया पछाड़ती हैं। देहअभिमान में आने से बाप को भूल जाते हैं। ऐसे मीठे बाप को तो न भूलना चाहिए ना। स्त्री पति को भूलती है? पति मर जाता है तो उनके शरीर को याद करती रहती हैं। यह तो वेहद का बाप ~~इनको~~ तुमको पढ़ा रहे हैं। बाप कहते हैं मैं तुमको विश्व का मालिक बनाता हूं तुम मुझे याद नहीं करते हो। माया भूलाकर कोई न कोई उल्टा काम करा देती हैं। चूहे मिसल काटती ऐसा है जो पता भी नहीं पड़ता है इसलिये बाप फिर भी कहते रहते हैं अपने को आत्मा समझ मुझे याद करो। औरों का भी कल्याण करो। बाप का पैगाम दे दैवी गुण धारण कराओ। परन्तु ड्रामा प्लेन अनुसार कल्प पद ही पाना है तो कर ही क्या सकते हैं। कल्प2 न पढ़ते हैं। अभी न पढ़ेंगे। सिध हो जाता है आगे कल्प भी नहीं पढ़ते थे। ऐसी चलन थी। नाम रूप देश काल चलन सब वही रहेगी। कल्प2 का पुराना स्वभाव है कल्प2 उसे ही चलते रहेंगे। ओम।